GOVERNMENT (AUTONOMOUS) GIRLS POST GRADUATE
COLLEGE OF EXCELLENCE, SAGAR (M.P.)
(NAAC 'A' Grade Accredited)
07582 404480 heggpgcsag@mp.gov.in www.ggpgcs.com

CRITERION - VII

INSTITUTIONAL VALUES AND BEST PRACTICES

7.1

Institutional Values and Social Responsibilities

GOVERNMENT (AUTONOMOUS) GIRLS POST GRADUATE
COLLEGE OF EXCELLENCE, SAGAR (M.P.)
(NAAC 'A' Grade Accredited)
07582 404480 heggpgcsag@mp.gov.in www.ggpgcs.com

Ref. No.

Sagar, Date 01/08/2024

DECLARATION

The information, reports, true copies of the supporting documents, numerical data etc. furnished in this file are verified and found correct.

Dr. Anand Tiwari
Principal

GOVERNMENT (AUTONOMOUS) GIRLS POST GRADUATE COLLEGE OF EXCELLENCE, SAGAR (M.P.)

(NAAC 'A' Grade Accredited)

07582 404480 heggpgcsag@mp.gov.in www.ggpgcs.com

Details of inclusion of correlation of Hindi language with Moral Values in the Syllabus of National Education Policy

vkUrfjd x|.koÙkk vk'oklu i|dk"V

'kkldh; Lo'kklh dU;k LukrdkÙkj mR—"Vrk egkfo|ky;] lkxj ¼e-i-½

Hkk"kk vkj u|frd eY;

शिक्षा विद्यार्थियों को अच्छा इंसान बनाने शाश्वत मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने और भविष्यत जीवन संघर्ष में शुचिता पूर्ण साधनों का उपयोग करते हुए सफल मार्ग प्रशस्त करती है। साथ ही उसमें जिज्ञासा एवं प्रश्नाकुलता का अंकुरण करती है, सही गलत का नीर–क्षीर विवेक पैदा करती है।

सम्पूर्ण जीव जगत में मनुष्य सर्वोच्च विकसित प्रजाति है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है – भाषा, धर्म और जाति के आधार पर मनुष्य बंटा हुआ है। ऐसी स्थिति में जीवन मूल्य जो हर परिस्थिति में एक समान है, उनका निर्वहन प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। प्रत्येक व्यक्ति समाज और राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं के अनुसार मूल्यों को पारिभाषित करने लगता है, इस कारण चारों और एक विरोधाभास उत्पन्न हो रहा है, ऐसी स्थिति में हमारे जीवन मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे हैं, ऐसी स्थिति में यही समय है कि हम ठोस कदम उठायें और मूल्यों को पुनः प्रतिष्ठापित करें। शिक्षा के माध्यम से हमें समाज को उन्नत बनाने का प्रयत्न करना होगा।

महाविद्यालय का हिन्दी विभाग पाठ्यक्रम में शामिल ''हिन्दी भाषा और

नैतिक मूल्य'' के अध्यापन के द्वारा युवा पीढी में इन्ही मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत है और यह हमारा प्रथम दायित्व भी हैं। क्योंकि एक सशक्त राष्ट्र का निर्माण उस राष्ट्र में रहने वाले लोगो के माध्यम से ही संभव है। राष्ट्र के प्रति निष्ठा और प्रेम आपसी सदभाव, अनुशासन व आचरण एक अच्छे नागरिक की पहचान है और इनका निर्माण नैतिक मूल्यों के परिचालन से ही संभव है।

भागवदगीता जिसे हम मानवीय संबंधों, दृष्टिकोण, दर्शन, ज्ञान और उपदेश का सर्वोत्कृष्ट और सर्वकालिक ग्रंथ मानते है, जिसमें 26 मानवीय मूल्यों की विवेचना की गई हैं। भारतीय संस्कृति के अनुसार जीवन में मूल्य ही सत्य होते हैं। आधार पाठयक्रम के अर्न्तगत ''भाषा और संस्कृति'' तथा नैतिक मूल्य पढाये जाते हैं। जिससे विद्यार्थी जीवन मूल्य, समाज व्यवस्था तथा राष्ट्रीय उपलब्धियों से परिचित हो सके साथ ही विद्यार्थी संप्रेषण कौशल तथा भाषा और व्याकरण का ज्ञान सीख सकें।

पाठयक्रम में पढ़ाये जाने वाले निम्न अध्याय इस प्रकार हैं–

iFke o"k & Hkk"kk vkj lLdfr		
Ø-	ikB dk uke	ufrd eY;
1.	मातृभूमि (कविता) (मैथिलीशरण गुप्त)	इस कविता के माध्यम से कवि ने प्रत्येक देशवासी को अपनी मातृभूमि के प्रति भक्ति भावना बनाये रखने की शिक्षा दी है। साथ ही इसकी रक्षा और समृद्धि के लिए आत्मबलिदान करने की सत्प्रेरणा दी है।
2.	भारतीय भाषाओं में राम (वैचारिक)	राम साहित्य में सामाजिक संरचना और मूल्यों की रक्षा के लिए अन्याय का प्रतिकार दर्शाया गया हैं।

3.	उत्साह (रामचंद्र शुक्ल)	उत्साह मनुष्य के अन्दर छिपा एक मनोविकार हैं, जो साहस एवं आंनद के मेल से बना हुआ हैं कर्म के मार्ग में आने वाली बाधाओं का सामना अगर साहस एवं आनंद के साथ किया जाये तो सच्चा उत्साही कहा जायेगा।
4.	धर्म	धर्म मनुष्य को मनुष्य होने का बोध कराता है, सही–गलत का भेद बताता हैं, तथा उसे मानवता सिखाता हैं।
5.	भाषा	भाषा ज्ञान को असीम बनाती हैं और निराकार विचारों को साकार रूप देती है। भाषा मानव विचार एवं चिंतन की वाहक हैं, यह समाज और देश में प्राणदायिनी शक्ति उत्पन्न करती है। इस प्रकार भाषा का मानव के सामाजिक, सास्कृतिक और राष्ट्रीय जीवन में बड़ा महत्व हैं।

f}rh; o"k & fgUnh Hkk"kk vkj ufrd eY;		
Ø-	ikB dk uke	ufrd eY;
1.	शिकागों व्याख्यान (स्वामी विवेकानंद)	भारतीय संस्कृति व धार्मिक एकता से समाज में नैतिक मूल्यों का समावेश किया गया।
2.	धर्म और राष्ट्रवाद (लेख) (महर्षि अरविन्द)	धर्म और राष्ट्रवाद के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन किस प्रकार किया जाए।
3.	सदगी : महात्मा गॉधी (आत्मकथा)	जीवन में अनुशासन, स्वावलम्बन, नियमितता, सदाचार का पालन करना।
4.	चित्त जहॉ भयविहीन रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कविता)	सांस्कृतिक बहुल राष्ट्र बनाने एवं उसकी अखंडता को बनाएँ रखना ही मुख्य उद्देश्य।
5.	नारीत्व का अभिशाप महादेवी वर्मा (निबंध)	नारी की समस्या उसकी वेदना, उसके बलिदान द्वारा किये गए सुकार्य की अमर गाथाओं से नारी की यथार्थ स्थिति का बोध कराना।

r'rh; o"k & fgUnh Hkk"kk vkj ufrd eY;		
Ø-	ikB dk uke	ufrd eY;
1.	विश्व के प्रमुख धर्म एवं विशेषताएँ	भारतीय संस्कृति में सभी धर्मों का समान उद्देश्य है– राष्ट्र निर्माण एवं विश्व कल्याण की भावना, परिवार, समाज आदि के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने का भाव सम्मिलित किया गया हैं।
2.	सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा) महात्मा गॉधी	महात्मा गॉधी के विचारों से युक्त इस पाठ में शिक्षा को आर्थिक सामाजिक और आध्यात्मिक मार्ग को प्रशस्त करने को ही वास्तविक शिक्षा कहा है। शिक्षा शाश्वत मानवीय मूल्यों को आत्मसात् कराती हैं।
3.	म.प्र. की लोक कलाएँ	म.प्र. का लोककला, एवं लोक साहित्य अत्यन्त समृद्ध है, यहां की लोक संस्कृति भारतीय संस्कृति के मूल्यों से अनुप्राणित होते हुए भी निजता और विशिष्टता के कारण स्वतंत्र पहचान बनाये हुए हैं। म.प्र. की लोककला में प्राकृतिक रंग लोकचित्र शिल्प एवं लोकनृत्य प्रमुख हैं।
4.	म.प्र. का लोक साहित्य	लोक साहित्य मे प्राचीन संस्कृति संस्कार, संवेदना तथा हमारे जीवन मूल्यों की भी अभिव्यक्ति होती है, जो लोक हद्य से निकलकर लोकमन की यात्रा करता हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लोक साहित्य असभ्य एवं अशिक्षित जनता का साहित्य है, जिसमें उनकी लोकसंस्कृति सभ्यता एवं जीवन के विविधरंग अभिव्यक्त होते हैं।

डॉ. नवीन गिडियन
प्रभारी प्राध्यापक (नैक)